भारतीय भाषाएँ और अनुवाद साहित्य (मराठी भाषा के विशेष संदर्भ में)

हसीना अब्दुलअजीज मालदार

हिंदी विभाग, डी. आर माने महाविद्यालय, कागल.

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17263489

ABSTRACT:

भारत एक विशाल बहुभाषी राष्ट्र है। भारत की प्रादेशिकता अलगअलग विशेषता युक्त भूभागों से समृद्ध है। अलगअलग प्रदेशों के होने के बावजूद भी अनेकता में एकता इस देश की प्रमुख विशेषता है। इस विशेषता के पीछे एक विशेष भाव कार्यरत है। यह भाव प्रेम, सौहार्द, सांस्कृतिक एकता, सद्भाव, सांप्रदायिक ऐक्यत्व, प्रादेशिक अखंडत्व, भाषाई समन्वय आदि दृष्टिकोणों से महत्वपूर्ण है। भाषाई एकता एवं समन्वयता को दृढ़ बनाने वाला यह भाव अनुवाद का है। भारत में आज अनेक भाषाएँ एवं बोलियाँ प्रचलित हैं। इन सभी भाषाओं को 'भारतीय भाषाएँ' नाम से संबोधित किया जाता है। भारतीय भाषाओं में लिखे हुए साहित्य में निहित भाव लगभग एक जैसा ही है। भारत में प्रांत भले ही अलगअलग क्यों न हों लेकिन इन प्रांतों में बसे हुए लोगों की विचारधारा एक ही है। इसी कारण इन प्रांतों में सृजित साहित्य के भाव भी एक ही हैं। इसी भाव के कारण भारत एक ही राष्ट्रीय भावना से बंधित है। भारत की भाषाओं में रचित साहित्य को जब अन्य भाषा में अनूदित किया जाता है, तो हम देख पाते हैं कि स्रोत भाषा के साहित्य की संवेदना लक्ष्यभाषा के साहित्य की संवेदना लगभग एक ही है। अतः प्रस्तुत शोधनिबंध में मराठी भाषा से अनूदित हिंदी साहित्य में भावों और विचारों के ऐक्यत्व के निर्वाह को दर्शाया है।

KEYWORDS:

भारतीय भाषाएँ, अनुवाद साहित्य, मराठी भाषा, साहित्यिक संवेदना, राष्ट्रीय एकता.

प्रस्तावना:

भारतीय भाषाओं का अनुवाद साहित्य से गहरा संबंध रहा है। भारत के विभिन्न प्रांतों में विभिन्न भाषाएँ बोली जाती हैं। सांस्कृतिक एकता का निर्वहन तब समझ में आता है जबकि एक भाषा के साहित्य का दूसरी भाषा में अनुवाद हुआ है। भारतीय साहित्य के अनुवाद करने की परंपरा काफी पुरानी है। भारत के प्राचीन ग्रंथों के अनुवाद भी हो चुके हैं। इससे भारतीय अस्मिता जागृत होती है। भारतीय जनजीवन की समानता – असमानता का चित्रण होता है। विचारधाराओं का आदानप्रदान होता है और भारतीय इतिहास, समाज एवं संस्कृति के महत्व का पता लग जाता है। भारतीय साहित्य, साहित्य क्षेत्र में एक व्यापक परिकल्पना है। इसे पहले समझ लेना आवश्यक है क्योंकि भारतीय भाषाओं का इससे संबंध है। हम इस शोध निबंध में भारतीय भाषाओं के अनूदित साहित्य का अवगाहन प्रस्तुत करने वाले हैं। अतः भारतीय साहित्य के और भारतीय भाषाएँ आदि के संबंध को समझ लेना आवश्यक है। "भारतीय साहित्य एक व्यापक शब्द है क्योंकि भारत में बहुजातीय राष्ट्रीयता एवं बहुभाषिकता प्रारंभ से रही है। अतः भारतीय साहित्य भाषाविशेष का साहित्य न होकर विविध भाषाओं का साहित्य है। इस बहुभाषिकता में एकता के जो सूत्र विद्यमान हैं, उन्होंने भारतीय साहित्य की निर्मिति की है। अतः साहित्य विविध होकर भी एक है।" १ भारतीय साहित्य नामक पुस्तक में लेखक ने लिखा है "हिंदी सार्वदेशिक साहित्य की प्रतिनिधि भाषा है। उसके साथ मिलकर क्षेत्रीय भाषाएँ विकसित हो रही हैं। जनभाषाओं में मूलभूत एकता विद्यमान है। उसके मुख्य कारण इस प्रकार हैं –

1. भारत एक इकाई है, जिसकी एक संस्कृति है।
2. किसी राष्ट्र में नाना धर्मों की उपस्थिति संस्कृति के विकास का प्रतीक है, न कि विभाजन का। संप्रदाय संस्कृति का विभाजन नहीं करते।
3. भारत में प्राचीन काल में विभाजन नहीं था। जो विभाजन मिलता है, वह कार्यों का विभाजन था। जिसका उद्देश्य राष्ट्र का निर्माण था।
4. सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य का मूल स्वर एक है।" २

उपरोक्त वक्तव्य इस बात का द्योतक है की, भारतवर्ष में बोली

जानेवाली भारतीय भाषाएँ एक ही माता की उपज हैं। इनमे किसी प्रकार का भेद नहीं है। प्रदेश विशेष की भौगोलिकता के कारण कुछ भेद दिखाई देते हैं किंतु इससे इनमे अलगाव लाना गलत बात है। जब भी साहित्य का आदान प्रदान अनुवाद के माध्यम से किया जाएगा तो पता चलेगा की इसकी मूल संवेदना एक ही है, जो भारतीयता को दर्शाएगी। प्रस्तुत आलेख में भारतीय भाषाओं के अनूदित साहित्य का परिचय दिया गया है और यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है की भारतीय भाषाओं में निर्मित साहित्य की मूल संवेदना एक है।

केन्द्रीय भाव:

भारत में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। भारतीय संविधान की आठवी अनुसूची में २२ भाषाओं को मान्यता दी गई है। ये भाषाएँ हैं हिंदी, बंगला, तेलुगु, मराठी, तमिल, उर्दू, गुजराती, कन्नड, मलयालम, उड़िया, पंजाबी, असमिया, सिंधी, नेपाली, कोंकणी, मणिपुरी, कश्मीरी, संस्कृत, आदि। इन भाषाओं की जननी संस्कृत है। भारत के भाषाई इतिहास को पढ़ने से यह समझ में आता है कि, संस्कृत से पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, क्षेत्रीय अपभ्रंश और भारत के अलगअलग प्रांतों की भाषाएँ निर्माण हुई हैं। अतः दिखने में भले ही ये अलगक्यों न दिखती हों किंतु इसमें प्रवाहित विचार एक ही जननी में जन्में आम जन के विचार हैं। आप चाहे किसी भी भाषा के, किसी भी काल के साहित्य से तुलना करेंगे तो पता चलेगा की इनमें निहित मानवीय भाव एक ही हैं। यही भारतीय भाषाओं में निहित विचारों की विशेषताएँ हैं। इस साहित्य में संस्कृति का वहन हुआ है। मानवीय संवेदना है। भारत के मूल में रही राष्ट्रीय भावना विद्यमान है। मानव को मानव कहने की पुकार है। स्त्री के सौंदर्य का चित्रण है। प्राकृतिक उपादानों के पौराणिक महत्व का चित्रण है। महापुरुषों के वे विचार सत्य को सत्य और असत्य को असत्य कहने के लिए समर्थ हैं। कुल मिलाकर कह सकते हैं की भारत की भाषाओं में पनपता साहित्य लगभग एक समानता को दर्शाता है। यह संपूर्ण भारतीय भाषाओं के साहित्य में पाया जाता है। इसका मुख्य कारण है अनुवाद साहित्य। अतः अनुवाद साहित्य के महत्व को भी देखना यहाँ आवश्यक है।

अनुवाद – विधा के महत्व एवं प्रासंगिकता को स्पष्ट करते हुए

लिखा गया है "अनुवाद दो भाषाओं, दो संस्कृतियों के बीच सेतु का काम करने वाली सशक्त विधा है। अनुवाद केवल भाषांतर ही नहीं होता है, बल्कि अलगअलग भाषा भाषियों को समभूमि पर प्रतिष्ठित करके उन्हें वाणी प्रदान करता है। अनुवाद के माध्यम से विभिन्न सभ्यताओं, संस्कृतियों, धर्मों और सामाजिक स्तरों पर तथा देशविदेश में संवाद स्थापित हो पाता है। 'वसुधैव कुटुंबकम्' के विचार को स्थापित करने और संपूर्ण विश्व में ज्ञान विज्ञान तथा नवीनतम जानकारी को दूसरी भाषा में प्रस्तुत करने का मुख्य माध्यम अनुवाद है।" ३ देश की विभिन्न भाषाओं के साहित्य में निहित विचार, संवहन का माध्यम अनुवाद होता है। इस संदर्भ में लिखा है "वस्तुतः अनुवाद एक महत्वपूर्ण विधा है जिससे राष्ट्र में विद्यमान विविध भाषाओं या बोलियों के ज्ञान और विचारों को वाणी भी मिलती है। अनुवाद राष्ट्र की एकता को बनाए रखने का सशक्त माध्यम है।" ४

इस प्रकार अनुवाद साहित्य की अपनी एक विशेषता है। संस्कृति, इतिहास को एक रूप में बांधे रखने की प्रक्रिया का नाम अनुवाद है। अतः भारत बहुभाषी, बहुप्रदेशी राष्ट्र होने के बाद भी जिस राष्ट्रीयत्व एवं ऐक्यत्व का निर्वाह अनुवाद साहित्य की वजह से हुआ है वह महत्वपूर्ण है। अतः भारतीय साहित्य के अनुवाद का संक्षिप्त इतिहास यहाँ देखेंगे।

असमिया से हिंदी अनुवाद कम पैमाने पर हुआ है। क्योंकि असमिया वाक्यरचना हिंदी से बिल्कुल अलग है। डॉ. रामनाथ त्रिपाठी ने 'नीलकंठी बजे' उपन्यास का अनुवाद किया। अन्य अनुवादकों में वीरेंद्रकुमार भट्टाचार्य, भट्ट नवकान्त बरुआ, हीरेन भट्टाचार्य आदि प्रमुख हैं। उड़िया भाषा और हिंदी की वाक्यरचना में कई प्रकार की समानताएँ दिखाई देती हैं। उड़िया के उपन्यासकार फकिर मोहन सेनापति के उपन्यास 'छमाण आठ गुंठ' का अनुवाद 'छः बीघा जमीन' नाम से हुआ है। इसके अतिरिक्त प्रतिभा राय की कहानियों के अनुवाद भी हुए हैं। नेपाली भाषा की लिपि और हिंदी की लिपि एक ही है। लिपि की तरह ही अन्य कई समानताएँ इन दो भाषाओं में हैं। अतः नेपाली से भी कतिपय रचनाओं के हिंदी में अनुवाद हुए हैं। बांग्ला के बंकिमचंद्र चटर्जी की रचनाओं, रवींद्रनाथ टैगोर की रचनाओं, महाश्वेतादेवी की रचनाओं, शरतचंद्र की रचनाओं के हिंदी अनुवाद हो चुके हैं। मणिपुरी से भी कतिपय मात्रा में हिंदी अनुवाद हुए हैं। गुजरात के चक्रधर स्वामी ने तो

हिंदी में ही रचनाएँ रची हैं। पंजाबी के अमृता प्रीतम, अवतारसिंह पाश, भगतसिंह, राजेंद्र सिंह, गुरुचरण सिंह की रचनाओं के हिंदी अनुवाद हो चुके हैं। अमृता प्रीतम का उपन्यास 'पिंजर' का अनुवाद विशेष प्रसिद्ध है। सिन्धी और हिंदी में भी विशेष अंतर नहीं है। इसलिए सिन्धी से हिंदी में भी अनुवाद हुए हैं। तमिल के उपन्यास 'आराम कुर्सी' एवं 'एक कावेरी सी' आदि के अनुवाद हुए हैं। तेलुगु भाषा प्रसिद्ध रही है। तेलुगू से हिंदी में साहित्यिक कृतियों के अनुवाद हुए हैं। इनमें – बालशौरि रेड्डी के कहानी संग्रह "उन आँखों की कथा" अनुवाद हुआ है। कन्नड से भी हिंदी में अनुवाद हुए हैं। यु. आर. अनंतमूर्ति के उपन्यासों के हिंदी अनुवाद हुए हैं। मलयालम के शिवशंकर पिल्लै, एम.टी. वासुदेव नायर जैसे रचनाकारों की रचनाओं के हिंदी अनुवाद हुए हैं।

मराठी भाषी रचनाकारों ने हिंदी में अनुवाद कार्य क्षेत्र में समृद्धता निर्माण की है। लोकमान्य तिलक की कृति 'गीता रहस्य' का अनुवाद हिंदी में हुआ है। मधुकर रामराव यार्दी ने 'सुरस ज्ञानेश्वरी' इस ग्रंथ का निर्माण किया है। डॉ. प्रभुदास भूपटकर ने फ्रेंन्सिसी नाटक 'डेमेजड गुड्स' का अनुवाद 'फटेहाल' नाम से हिंदी में किया। उन्होंने ही मराठी के प्रसिद्ध साहित्य पु. ल. देशपांडे के 'पुढारी पाहिजे' फार्स को 'मुखिया चाहिए' नाम से हिंदी अनुवाद किया। मराठी लेखिका श्रीमती दुर्गा दीक्षित की मराठी नाट्यकृति 'जुगार' का आपने ही 'जुआ' अनुवाद किया। महाराष्ट्र के पुणे निवासी श्रीपाद जोशी ने लगभग ७० पुस्तकों के हिंदी अनुवाद किये हैं। मराठी की कादंबरी 'विसरलेलं घरटं' का आपने हिंदी में 'ध्वस्त नीड' नाम से अनुवाद किया है। जोशी ने ने भी ३६ किताबों के हिंदी से मराठी में अनुवाद किए हैं। इसी श्रेणी में अनेक अनुवादकों के नाम गिनाए जा सकते हैं। जिनमें प्रभाकर माचवे, शंकर पुणतांबेकर, डा. आनंदप्रकाश दीक्षित, मुरलीधर जगताप, अनंत गोपाल शेवडे, सूर्यनारायण रणसुभे, डॉ. सिंधु भिंगारकर, डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर, डॉ. सुशीला दुबे, डॉ. केशव प्रथमवीर, डॉ अर्जुन चव्हाण, डॉ वासंती साळवेकर, डॉ. हनुमंत साने, डॉ. अशोक कामत, मीरा नांदगावकर, पांडुरंग कापडनीस, डॉ गजानन चव्हाण, मृणालिनी सावंत, डॉ. दामोदर खडसे, आसावरी काकडे, डॉ. स्मिता दात्ये, डॉ. पद्मा घोरपडे, डॉ. सुनील देवधर, डॉ. गोरख थोरात, आदि ने मराठी से हिंदी और हिंदी से मराठी में अनुवाद कार्य कर भारतीय भाषाओं में अनुवाद के माध्यम से सेतु निर्माण का

कार्य किया है।

निष्कर्ष:

उपरोक्त विवेचन के आधार पर यह स्पष्टता के साथ कह सकते हैं की भारतीय भाषाओं का साहित्य अपना साहित्य है। उसमे अपने पन का भाव है। भारत एक विशाल भूखंड का राष्ट्र होने के कारण अलग अलग संघ राज्यों से बना है। अतः यहाँ की भाषाएँ भी अनेक हैं किंतु अस्मिता एक ही है। मानवीय संवेदना एक ही है। इन सारी बातों का पता तब चलता है जब एक भाषा साहित्य का अनुवाद दूसरी भाषा में किया जाता है। जब एक भाषा के साहित्य की तुलना किसी दूसरी भाषा के साहित्य से की जाती है। समानता असमानता को परखा जाता है। भाषाई एवं साहित्य की एकात्मता से ही भारतीय एकात्मता के दर्शन दिखाई देते हैं।

सन्दर्भ:

1. भारतीय साहित्य, डॉ. लक्ष्मीकांत पांडेय, ज्ञानोदय प्रकाशन; कानपुर, क. फ्लेप से, २००६ पृ. १२
2. भारतीय साहित्य, डॉ. लक्ष्मीकांत पांडेय, ज्ञानोदय प्रकाशन; कानपुर, क. फ्लेप से, २००६
3. हिंदी भाषा और साहित्य को पुणे का योगदान डॉ. सिराज शेख, आर के पब्लिकेशन मुंबई, पृ. १६४
4. अनुवाद, संपादक नीना गुप्ता, भारतीय अनुवाद परिषद, नई दिल्ली, २०११

Funding:
This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.